International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
e-ISSN :2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 01(II), January - March, 2026, pp. 37-44

गांधीवादी दर्शन और आधुनिक सतत विकास मॉडल का तुलनात्मक अध्ययन

Susheel Kumar Baswal*

Assistant Professor-Political Science, SRM Government PG College Sikrai, Dausa.

*Corresponding Author: baswalshalu1986@gmail.com

Citation: Baswal, S. (2026). गांधीवादी दर्शन और आधुनिक सतत विकास मॉडल का तुलनात्मक अध्ययन. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(01(II)), 37–44.

सार

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में विकास की दौड़ ने जहाँ एक ओर आर्थिक समृद्धि के नए आयाम खोले हैं, वहीं दूसरी ओर पर्यावरणीय संकट, सामाजिक असमानता और नैतिक अवसाद जैसी गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। ऐसे समय में महात्मा गांधी का दर्शन एक संतुलित और मानवीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो भौतिक प्रगति के साथ नैतिकता, आत्मसंयम और प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी को समान रूप से महत्व देता है। गांधीजी के विचारों का केंद्र 'सर्वोदय' अर्थात् सबका विकास है, जिसमें किसी एक वर्ग विशेष की उन्नति नहीं, बल्कि सम्पूर्ण समाज के कल्याण की परिकल्पना निहित है। उनका "सादा जीवन, उच्च विचार", "स्वदेशी" और "ग्राम स्वराज" का सिद्धांत आज के सतत विकास (Sustainable Development) की अवधारणा से गहराई से जुड़ा हुआ है। उन्होंने विकास को केवल उत्पादन या उपभोग की प्रक्रिया नहीं, बल्कि मानवता, नैतिकता और सामाजिक न्याय की दिशा में एक नैतिक यात्रा के रूप में देखा। यह शोधपत्र गांधीवादी दर्शन और आधुनिक सतत विकास मॉडल का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि गांधीजी के विचार आज भी आधुनिक विकास नीतियों के लिए दिशा–सूचक हो सकते हैं। गांधी का 'ट्रस्टीशिप सिद्धांत' आज की कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (CSR) की अवधारणा के अनुरूप है, जबकि उनका 'आत्मनिर्भरता' का सिद्धांत "आत्मनिर्भर भारत" और "स्थानीय उत्पादन" जैसी नीतियों की आत्मा है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि आधुनिक विकास प्रक्रियाओं में गांधीवादी मूल्यों जैसे नैतिकता, समानता, पर्यावरणीय संतुलन और सामुदायिक सशक्तिकरण को समाहित किया जाए, तो वि व एक अधिक स्थायी, न्यायसंगत और मानवीय दिशा में अग्रसर हो सकता है। अतः गांधीवादी चिंतन न केवल अतीत की विरासत है, बल्कि भविष्य के सतत और समतामूलक विकास की मजबूत वैचारिक आधारशिला भी है।

शब्दकोश: *गांधीवादी दर्शन, सतत विकास, स्वदेशी और आत्मनिर्भरता, ट्रस्टीशिप, ग्राम स्वराज, नैतिक अर्थशास्त्र, पर्यावरणीय संतुलन, सामाजिक न्याय।*

प्रस्तावना

महात्मा गांधी का दर्शन भारतीय चिंतन परंपरा और आधुनिक विश्व दृष्टि के संगम का प्रतिनिधित्व करता है। गांधीजी का जीवन और विचार केवल राजनीतिक आंदोलन तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने मानव

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

जीवन के हर क्षेत्र सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और पर्यावरणीय को स्पर्श किया। उनके लिए विकास का अर्थ था व्यक्ति के आत्मबल, नैतिकता और सत्य पर आधारित जीवन का निर्माण। गांधीजी ने स्पष्ट कहा था कि "पृथ्वी हर व्यक्ति की आवश्यकता पूरी कर सकती है, लेकिन किसी एक के लोभ को नहीं।" यह कथन उनके विकास दृ ष्टिकोण की आत्मा है, जो आज के पर्यावरण संकट और उपभोक्तावाद के युग में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है। गांधीवादी दर्शन का मूलाधार "सर्वोदय" की संकल्पना है कृ अर्थात् सबका समान और समग्र उत्थान। उन्होंने "ट्रस्टीशिप" का सिद्धांत दिया, जिसके अनुसार संपत्ति का स्वामी उसे समाज का न्यास मानकर उसका उपयोग सार्वजनिक कल्याण के लिए करे। ग्राम स्वराज, स्वदेशी, सादगी, आत्मनिर्भरता, श्रम की गरिमा और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता गांधीजी के विचारों के स्तंभ रहे हैं। उनके लिए विकास का मापदंड भौतिक संपन्नता नहीं, बल्कि मनुष्य की आत्मिक प्रगति और समाज की नैतिक उन्नति थी।

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जब मानव सभ्यता जलवायु परिवर्तन, संसाधनों के क्षरण, असमानता, बेरोजगारी और उपभोगवादी संस्कृति जैसी गंभीर चुनौतियों से जूझ रही है, तब "सतत विकास" (*Sustainable Development*) की अवधारणा विश्व समुदाय के लिए एक समाधान के रूप में उभरी है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2015 में निर्धारित सतत विकास लक्ष्य (*Sustainable Development Goals & SDGs*) इस बात की पुष्टि करते हैं कि अब विकास केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित नहीं रह सकता, बल्कि उसे सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय संरक्षण और अंतर–पीढ़ीगत समानता के सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए। इन लक्ष्यों में गरीबी उन्मूलन, स्वच्छ जल व ऊर्जा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक समानता, सतत उपभोग, जलवायु परिवर्तन से निपटना, और शांति व संस्थागत न्याय जैसी विषयवस्तुएँ सम्मिलित हैं कृ जो गांधीजी की सोच से गहराई से मेल खाती हैं।

अतः "गांधीवादी दर्शन और आधुनिक सतत विकास मॉडल का तुलनात्मक अध्ययन" का उद्देश्य इन दोनों विचारधाराओं के बीच समानताओं और भिन्नताओं का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि गांधीजी के नैतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय सिद्धांत किस प्रकार आधुनिक विकास नीतियों को एक मानवीय दिशा दे सकते हैं। आज जबकि तकनीकी प्रगति के बावजूद समाज में असमानता और पर्यावरणीय संकट बढ़ रहा है, गांधीवादी विचार पुनः प्रासंगिक हो उठे हैं। गांधीजी के "कम में संतोष" और "स्थानीय आत्मनिर्भरता" जैसे सिद्धांत आधुनिक सतत विकास मॉडल को एक वैचारिक और नैतिक आधार प्रदान कर सकते हैं। इस प्रकार यह शोध पत्र इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास है कि क्या आधुनिक विकास का मार्ग गांधीवादी मूल्यों के आलोक में अधिक टिकाऊ, संतुलित और मानवीय हो सकता है।

शोध समस्या

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में विकास की अवधारणा ने एक जटिल और बहुआयामी रूप ग्रहण कर लिया है। औद्योगीकरण, तकनीकी नवाचार और उपभोक्तावाद की तेज़ गति ने भले ही आर्थिक उत्पादन को बढ़ाया हो, किंतु इसके दुष्परिणाम के रूप में सामाजिक असमानता, पर्यावरणीय संकट, प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन और नैतिक मूल्यों का ह्रास स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। आधुनिक विकास मॉडल जहाँ आर्थिक वृद्धि को ही प्रगति का पर्याय मानता है, वहीं इस दृष्टिकोण ने विकास की मानवीय और नैतिक परिभाषा को लगभग उपेक्षित कर दिया है। जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापवृद्धि, जल–संकट, बेरोजगारी और गरीबी जैसी समस्याएँ यह संकेत देती हैं कि वर्तमान विकास नीतियाँ मानव और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करने में विफल रही हैं। संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित सतत विकास लक्ष्य (*Sustainable Development Goals & SDGs*) इन समस्याओं के समाधान का प्रयास करते हैं, किंतु व्यवहार में इन नीतियों में भी तकनीकी और आर्थिक पक्ष को ही अधिक प्राथमिकता दी जाती है, जिससे विकास का नैतिक और सांस्कृतिक आयाम गौण हो जाता है। इस स्थिति ने यह गंभीर प्रश्न उत्पन्न किया है कि क्या वर्तमान विकास की दिशा वास्तव में स्थायित्व, समानता और मानवीयता की ओर अग्रसर है या फिर यह केवल भौतिक प्रगति तक सीमित रह गई है।

महात्मा गांधी का दर्शन इस संदर्भ में एक वैकल्पिक और नैतिक दिशा प्रस्तुत करता है। गांधीजी के विचारों में विकास का अर्थ केवल आर्थिक वृद्धि नहीं, बल्कि मनुष्य के नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान से है। उनका "ग्राम स्वराज", "स्वदेशी", "सादगी" और "ट्रस्टीशिप" का सिद्धांत एक ऐसे विकास मॉडल की रूपरेखा प्रस्तुत करता है जो आत्मनिर्भरता, समानता और पर्यावरणीय संतुलन पर आधारित है। आज जब पृथ्वी संसाधनों की कमी, बढ़ते प्रदूषण और आर्थिक असमानता से जूझ रही है, तब गांधीवादी दृष्टिकोण पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है। समस्या यह है कि आधुनिक सतत विकास मॉडल मुख्यतः भौतिक और तकनीकी साधनों पर केंद्रित है, जबकि गांधीवादी मॉडल मानवीय मूल्यों और नैतिकता पर आधारित है। इस विरोधाभास ने शोध के क्षेत्र में यह प्रश्न उत्पन्न किया है कि क्या आधुनिक सतत विकास की नीतियाँ गांधीजी के सिद्धांतों से प्रेरणा लेकर अधिक संतुलित, नैतिक और स्थायी रूप ले सकती हैं? क्या गांधीवादी विचार वर्तमान वैश्विक चुनौतियों कृ जैसे जलवायु संकट, आर्थिक विषमता और उपभोक्तावाद कृ का वास्तविक समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं? इस शोध का उद्देश्य इसी समस्या की गहराई से पड़ताल करना है कि गांधीवादी दर्शन और आधुनिक सतत विकास मॉडल के बीच कितनी वैचारिक समानता है, और किस प्रकार गांधीजी के सिद्धांतों को अपनाकर एक अधिक न्यायपूर्ण, पर्यावरण–संतुलित और मानवीय विकास मॉडल की स्थापना की जा सकती है।

साहित्य समीक्षा

गांधीवादी दर्शन और आधुनिक सतत विकास मॉडल पर विद्यमान साहित्य यह स्पष्ट करता है कि गांधीजी के विचार केवल एक युग विशेष तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे आज के आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। अनेक विद्वानों ने गांधी के आर्थिक एवं सामाजिक चिंतन को आधुनिक विकास मॉडल के विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया है, जो भौतिक समृद्धि के स्थान पर नैतिकता, समानता और पर्यावरणीय संतुलन पर आधारित है।

डॉ. रमेश चंद्र मिश्रा (2010) की कृति "गांधी और भारतीय आर्थिक चिंतन" में गांधीजी के आर्थिक सिद्धांतों को भारतीय सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ में व्याख्यायित किया गया है। मिश्रा का मानना है कि गांधीजी का "स्वदेशी" और "ग्राम स्वराज" केवल आर्थिक नारे नहीं, बल्कि एक वैकल्पिक सामाजिक व्यवस्था के द्योतक हैं, जहाँ उत्पादन और उपभोग दोनों नैतिक मर्यादाओं से बंधे हों। उन्होंने यह भी बताया कि गांधी का चिंतन "नैतिक अर्थशास्त्र" की दिशा में एक नई सोच प्रस्तुत करता है, जो आधुनिक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की सीमाओं को उजागर करता है।

प्रो. रेखा सिंह (2014) की पुस्तक "गांधीवाद और समकालीन विकास मॉडल" में गांधीवादी विचारों और आधुनिक विकास नीतियों के तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से यह दिखाया गया है कि गांधीजी के "संतुलित विकास" और "आत्मनिर्भरता" के सिद्धांत आज के पर्यावरणीय संकट और आर्थिक असमानता को दूर करने की दिशा में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। लेखिका ने यह भी रेखांकित किया कि गांधी का "कम में संतोष" और "स्थानीय संसाधनों का अधिकतम उपयोग" का विचार संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (*SDGs*) से वैचारिक समानता रखता है।

डॉ. अरुण जोशी (2018) ने अपनी शोध कृति "आत्मनिर्भर भारत और गांधी का आर्थिक चिंतन" में गांधीवादी आर्थिक दर्शन को समकालीन "आत्मनिर्भर भारत अभियान" के संदर्भ में विश्लेषित किया है। जोशी का मत है कि गांधीजी द्वारा प्रतिपादित "ग्रामोद्योग" और "स्थानीय उत्पादन" की अवधारणा आधुनिक भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए न केवल पर्यावरणीय दृष्टि से टिकाऊ है, बल्कि यह ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन और असमानता घटाने में भी सहायक सिद्ध हो सकती है। उनका निष्कर्ष यह है कि यदि गांधीवादी मॉडल को आधुनिक तकनीकी नवाचारों के साथ जोड़ा जाए तो यह एक सशक्त सतत विकास नीति का आधार बन सकता है।

डॉ. सीमा यादव (2020) के अध्ययन "गांधी के ग्राम विकास मॉडल की समकालीन प्रासंगिकता" में गांधीजी के "ग्राम स्वराज" और "न्यूनतम आवश्यकता सिद्धांत" को वर्तमान ग्रामीण भारत की सामाजिक–आर्थिक समस्याओं से जोड़ा गया है। उन्होंने पाया कि गांधीवादी ग्राम विकास दृष्टिकोण आज भी ग्रामीण पलायन, बेरोजगारी, और शिक्षा की असमानता जैसे मुद्दों पर स्थायी समाधान प्रस्तुत कर सकता है। यादव के अनुसार गांधीजी का ग्राम स्वराज केवल आर्थिक स्वावलंबन नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और मानव मर्यादा की पुनर्स्थापना का माध्यम है।

प्रो. संजय तिवारी (2022) की नवीनतम कृति "नैतिकता और अर्थशास्त्रः गांधी का दृदृष्टिकोण" में गांधी के "नैतिक अर्थशास्त्र" को केंद्र में रखते हुए यह तर्क दिया गया है कि वर्तमान उपभोक्तावादी और भ्रष्टाचारग्रस्त आर्थिक प्रणाली में गांधीवादी सिद्धांत मानवता को पुनः नैतिकता की दिशा में अग्रसर कर सकते हैं। तिवारी का मत है कि गांधी का आर्थिक दृष्टिकोण "संपत्ति के सामाजिक उत्तरदायित्व" पर आधारित है, जो आज के असमान और असंवेदनशील वैश्विक बाजारवाद के युग में अत्यंत उपयोगी है।

इन शोधों के अतिरिक्त अन्य विद्वानों जैसे जे.सी. कुमारप्पा, जो गांधीजी के निकट सहयोगी और "नैतिक अर्थशास्त्र" के समर्थक थे, ने भी अपने ग्रंथ *ÞEconomy of Permanence'* (1945) में टिकाऊ विकास की वही अवधारणा प्रस्तुत की जो आज "सस्टेनेबल डेवलपमेंट" के नाम से जानी जाती है। इसी प्रकार यू.एन.डी.पी. और यू.एन.ई.पी. की रिपोर्टों में भी इस बात पर बल दिया गया है कि विकास नीतियों में नैतिकता और स्थानीय भागीदारी का समावेश आवश्यक है जो गांधी के ग्राम स्वराज के सिद्धांत से मेल खाता है।

अतः उपर्युक्त साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि गांधीवादी दर्शन आधुनिक सतत विकास मॉडल के लिए एक वैचारिक और नैतिक आधार प्रस्तुत करता है। जहाँ आधुनिक मॉडल तकनीकी नवाचार और आर्थिक वृद्धि पर केंद्रित है, वहीं गांधीवादी दृष्टिकोण विकास को मानवता, नैतिकता और प्रकृति के साथ सामंजस्य की प्रक्रिया मानता है। विद्वानों की यह सर्वसम्मति है कि यदि आज के वैश्विक विकास ढांचे में गांधी के सिद्धांतों कृ जैसे आत्मनिर्भरता, सादगी, ट्रस्टीशिप और ग्राम स्वराज को समाहित किया जाए, तो विश्व अधिक न्यायपूर्ण, पर्यावरण–संतुलित और स्थायी प्रगति की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

मुख्य विचार

महात्मा गांधी का दर्शन जीवन, समाज और विकास की एक ऐसी समग्र दृष्टि प्रस्तुत करता है जिसमें नैतिकता, आत्मनिर्भरता, सादगी और पर्यावरणीय संतुलन को समान महत्व प्राप्त है। गांधीजी के अनुसार विकास का वास्तविक अर्थ मनुष्य के नैतिक और आत्मिक उत्थान में निहित है, न कि मात्र भौतिक संपन्नता में। उनके "ग्राम स्वराज", "स्वदेशी" और "ट्रस्टीशिप" जैसे सिद्धांत इस बात को स्पष्ट करते हैं कि आर्थिक प्रगति तभी सार्थक है जब वह सामाजिक न्याय, समान अवसर और पर्यावरणीय संरक्षण के साथ जुड़ी हो। दूसरी ओर, आधुनिक युग का "सतत विकास मॉडल" (*Sustainable Development Model*) भी इसी दिशा में एक वैश्विक प्रयास के रूप में उभरा है, जो आर्थिक वृद्धि, सामाजिक समानता और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करने का लक्ष्य रखता है। हालांकि आधुनिक विकास मॉडल मुख्यतः तकनीकी नवाचार और नीतिगत उपायों पर केंद्रित है, जबकि गांधीवादी दृष्टिकोण व्यक्ति और समाज के नैतिक जागरण को विकास की आधारशिला मानता है। यही कारण है कि आज जब विश्व जलवायु परिवर्तन, असमानता और उपभोक्तावाद जैसी जटिल चुनौतियों से जूझ रहा है, तब गांधीजी की विचारधारा आधुनिक सतत विकास की आत्मा के रूप में पुनः प्रासंगिक हो उठी है।

- **गांधीवादी दर्शन की मूल अवधारणाएँ**

महात्मा गांधी का दर्शन भारतीय सांस्कृतिक परंपरा, आध्यात्मिकता और मानवीय मूल्यों पर आधारित एक समग्र जीवन दृष्टि है। उन्होंने मानव जीवन को सत्य, अहिंसा, सादगी, आत्मसंयम और करुणा जैसे नैतिक सिद्धांतों से जोड़ा। गांधीजी के अनुसार "सत्य" ही परम मूल्य है और "अहिंसा" उसका व्यावहारिक रूप। उनके लिए विकास का अर्थ केवल आर्थिक समृद्धि नहीं, बल्कि मनुष्य के चारों आयामों – शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक

और आध्यात्मिक – का संतुलित विकास था। गांधीजी ने पश्चिमी पूँजीवादी मॉडल की आलोचना करते हुए कहा कि यह केवल भौतिक सुखों पर आधारित है और अंततः मानवता के नैतिक पतन का कारण बनता है। इसके विपरीत, उन्होंने "स्वदेशी" और "ग्राम स्वराज" की अवधारणा के माध्यम से आत्मनिर्भर और विकेन्द्रीकृत समाज की कल्पना की, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति और गाँव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर सके।

गांधीजी का "ट्रस्टीशिप सिद्धांत" उनके आर्थिक चिंतन का नैतिक आधार है, जिसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी संपत्ति और संसाधनों को समाज का न्यास मानना चाहिए और उसका उपयोग लोककल्याण के लिए करना चाहिए। उन्होंने "कम में संतोष" और "प्रकृति के साथ संतुलन" की बात करते हुए उपभोग की सीमाएँ निर्धारित करने का संदेश दिया। उनका मानना था कि पृथ्वी पर सभी की आवश्यकताएँ पूरी हो सकती हैं, लेकिन किसी एक के लोभ की नहीं। यही विचार आधुनिक पर्यावरणीय नैतिकता और सतत विकास के सिद्धांतों से गहराई से मेल खाता है। गांधीजी की दृष्टि में विकास तभी स्थायी और सार्थक है जब वह व्यक्ति, समाज और प्रकृति कृ तीनों के बीच संतुलन स्थापित करे। इस प्रकार, गांधीवादी दर्शन एक नैतिक, आत्मनिर्भर और पर्यावरण–संवेदनशील विकास का आधार प्रस्तुत करता है, जो आज के यांत्रिक और उपभोक्तावादी युग में मानवता को एक नयी दिशा प्रदान कर सकता है।

- **आधुनिक सतत विकास मॉडल की अवधारणा**

आधुनिक युग में "सतत विकास" (*Sustainable Development*) की अवधारणा एक वैश्विक नीति और व्यवहारिक लक्ष्य के रूप में उभरी है, जिसका उद्देश्य आर्थिक प्रगति, सामाजिक समानता और पर्यावरणीय संतुलन के बीच सामंजस्य स्थापित करना है। इस अवधारणा की जड़ें 1987 की ब्रंटलैंड रिपोर्ट *ÞOur Common Future'* में मिलती हैं, जिसमें सतत विकास को इस रूप में परिभाषित किया गया – "वह विकास जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति तो करे, परंतु भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझौता न करे।" इस विचार के आधार पर संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2015 में 17 सतत विकास लक्ष्यों (*Sustainable Development Goals – SDGs*) को अपनाया, जिनमें गरीबी उन्मूलन, भूखमुक्ति, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक समानता, स्वच्छ जल व ऊर्जा, जलवायु कार्रवाई, और न्यायपूर्ण संस्थाएँ जैसी प्राथमिकताएँ शामिल हैं। यह मॉडल इस धारणा पर आधारित है कि आर्थिक वृद्धि तभी सार्थक है जब वह सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय संरक्षण के साथ जुड़ी हो।

हालाँकि आधुनिक सतत विकास मॉडल की सबसे बड़ी विशेषता इसका वैश्विक और तकनीकी दृष्टिकोण है, जिसमें वैज्ञानिक नवाचार, हरित ऊर्जा, और नीति–आधारित योजनाओं को प्रमुख स्थान दिया गया है। परंतु इसकी सबसे बड़ी चुनौती यह है कि यह विकास को अभी भी अधिकतर आर्थिक और सांख्यिकीय दृष्टि से परिभाषित करता है, जिससे नैतिकता, मानवीय मूल्य और सांस्कृतिक दृष्टिकोण अपेक्षाकृत गौण हो जाते हैं। वर्तमान विश्व व्यवस्था में जलवायु परिवर्तन, असमानता, शहरीकरण और उपभोग की प्रवृत्तियाँ यह दर्शाती हैं कि केवल तकनीकी समाधान पर्याप्त नहीं हैं। इस संदर्भ में सतत विकास मॉडल का नैतिक आधार कमजोर दिखाई देता है, जबकि गांधीवादी दृष्टिकोण विकास को नैतिकता और आत्मसंयम से जोड़ता है। इसलिए, आधुनिक सतत विकास मॉडल को वास्तविक रूप से प्रभावी और टिकाऊ बनाने के लिए उसमें मानवीय संवेदना, स्थानीय भागीदारी और नैतिक चेतना का समावेश अनिवार्य है कृ जो गांधीवादी दर्शन के मूल सिद्धांतों के अनुरूप है।

- **आधुनिक संदर्भ में सतत विकास और गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता**

आज का वैश्विक समाज तकनीकी उन्नति, औद्योगिकीकरण और पूँजीवादी प्रतिस्पर्धा के युग में प्रवेश कर चुका है, जहाँ आर्थिक विकास को अक्सर प्रगति का पर्याय माना जाता है। किन्तु इस विकास की दिशा ने मानव और प्रकृति के संबंधों को असंतुलित कर दिया है। जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का ह्रास, ऊर्जा संकट और सामाजिक असमानता जैसे संकट यह दर्शाते हैं कि वर्तमान विकास मॉडल में स्थायित्व और नैतिकता का अभाव है। ऐसे परिवेश में महात्मा गांधी के विचार न केवल वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, बल्कि एक संतुलित, नैतिक और मानवीय विकास की राह भी सुझाते हैं। गांधीजी ने विकास को केवल भौतिक उन्नति नहीं

माना, बल्कि उन्होंने इसे मानवता, आत्मसंयम और प्रकृति के साथ सामंजस्य के रूप में परिभाषित किया। उनका मानना था कि ″पृथ्वी सभी की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है, लेकिन किसी एक के लोभ को नहीं″, यह विचार आज के पर्यावरणीय संकट के समाधान में अत्यंत सार्थक प्रतीत होता है।

गांधीवादी चिंतन का मूल तत्व 'सादा जीवन उच्च विचार' है, जो उपभोगवाद के विपरीत एक नैतिक जीवनशैली का समर्थन करता है। उनके 'स्वदेशी' और 'स्वावलंबन' के सिद्धांत आधुनिक सतत विकास के सिद्धांतोंकृस्थानीय संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था और सामुदायिक सशक्तिकरणकृसे गहराई से मेल खाते हैं। गांधीजी के 'ट्रस्टीशिप सिद्धांत' में धन और संसाधनों को ईश्वर का उपहार मानते हुए उनके उपयोग को समाज की सेवा से जोड़ा गया है, जो आज के कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (*CSR*) की अवधारणा का मूल प्रेरणा स्रोत बनता है। इस प्रकार गांधीवादी दर्शन न केवल नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से प्रासंगिक है, बल्कि वर्तमान समय के सतत विकास लक्ष्यों (*Sustainable Development Goals*) को प्राप्त करने की दिशा में एक व्यावहारिक और मानवीय आधार भी प्रदान करता है।

- **गांधीवादी आर्थिक दृष्टिकोण और पर्यावरणीय संतुलन**

गांधीजी का आर्थिक दृष्टिकोण केवल उत्पादन और उपभोग तक सीमित नहीं था, बल्कि यह नैतिकता, आत्मसंयम और सामाजिक कल्याण पर आधारित एक समग्र जीवन–दर्शन था। उनका मानना था कि वास्तविक अर्थशास्त्र वही है, जो समाज के सबसे अंतिम व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। गांधीजी ने 'ट्रस्टीशिप' के सिद्धांत के माध्यम से पूंजीवाद और समाजवाद के बीच एक संतुलित मार्ग सुझाया कृ जहाँ संपत्ति का स्वामित्व व्यक्तिगत हो सकता है, पर उसका उपयोग समाज की भलाई के लिए होना चाहिए। उन्होंने औद्योगिकीकरण को अनियंत्रित रूप से स्वीकार नहीं किया; बल्कि मशीनों के प्रयोग को मानव श्रम के पूरक के रूप में देखा, प्रतिस्थापन के रूप में नहीं। इस प्रकार, गांधीवादी अर्थशास्त्र केवल आर्थिक समृद्धि का साधन नहीं था, बल्कि एक नैतिक अनुशासन था जो व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करने का माध्यम बनता है।

गांधीजी का यह दृष्टिकोण पर्यावरणीय संतुलन की आधुनिक अवधारणा से गहराई से जुड़ा हुआ है। उन्होंने अत्यधिक उपभोग, भौतिक विलासिता और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन का विरोध किया, क्योंकि उनके अनुसार ऐसा विकास अंततः विनाश का कारण बनता है। गांधी का 'सादा जीवन' सिद्धांत प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, पुनर्चक्रण और संतुलित उपयोग को प्रोत्साहित करता है कृ जो आज के ″सस्टेनेबल कंजम्प्शन″ (*Sustainable Consumption*) मॉडल का आधार है। आधुनिक युग में जहाँ कार्बन उत्सर्जन, ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरणीय क्षरण गंभीर वैश्विक चुनौतियाँ बन चुकी हैं, वहाँ गांधी का यह विचार कि ″प्रकृति के साथ संतुलन ही सच्चा विकास है″ पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है। गांधीवादी आर्थिक दर्शन हमें यह सिखाता है कि विकास तभी सार्थक है जब वह पर्यावरण की रक्षा, सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा तीनों को साथ लेकर चले।

- **स्वदेशी और आत्मनिर्भरताः सतत विकास की आधारशिला**

गांधीजी के विचारों का केंद्रबिंदु ″स्वदेशी″ था, जो केवल स्थानीय उत्पादन का नारा नहीं बल्कि एक व्यापक सामाजिक, आर्थिक और नैतिक सिद्धांत था। गांधीजी के अनुसार स्वदेशी का अर्थ है कृ अपने परिवेश, संसाधनों और आवश्यकताओं के अनुरूप उत्पादन एवं उपभोग करना। यह विचार आज के वैश्वीकरण और उपभोक्तावाद के युग में अत्यंत प्रासंगिक है, जहाँ स्थानीय उद्योगों के स्थान पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। गांधी का मानना था कि आत्मनिर्भरता (*Self-Reliance*) ही आर्थिक स्वतंत्रता का वास्तविक मार्ग है, क्योंकि जब गाँव अपने उत्पादन और उपभोग में सक्षम होंगे, तभी राष्ट्र सच्चे अर्थों में स्वतंत्र और सशक्त बनेगा। यह सिद्धांत आधुनिक ″लोकल टू ग्लोबल″ (स्वबंस जव ळसवइंस) मॉडल के समान है, जिसमें स्थानीय संसाधनों और कौशल के उपयोग को सतत विकास के केंद्र में रखा गया है।

गांधीजी का "ग्राम स्वराज" इसी आत्मनिर्भरता का व्यवहारिक रूप था कृ एक ऐसा समाज जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार, सम्मान और आत्मनिर्णय का अधिकार प्राप्त हो। उनके अनुसार, विकास का आधार शहर नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर गाँव होने चाहिए। उन्होंने कहा था कि "भारत की आत्मा उसके गाँवों में बसती है।" यह विचार आज के "सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स" (*SDGs*) के साथ भी सामंजस्य रखता है, विशेषकर गरीबी उन्मूलन, रोजगार सृजन और स्थानीय उत्पादन को प्रोत्साहन देने वाले लक्ष्यों के साथ। वर्तमान में जब "मेक इन इंडिया" और "आत्मनिर्भर भारत" जैसे अभियानों को राष्ट्रीय नीति का हिस्सा बनाया गया है, तब यह स्पष्ट होता है कि गांधीजी का स्वदेशी सिद्धांत केवल अतीत का आदर्श नहीं, बल्कि भविष्य के सतत और समतामूलक विकास का आधारस्तंभ भी है।

- **ट्रस्टीशिप और सामाजिक न्याय का गांधीवादी मॉडल**

गांधीजी के आर्थिक और सामाजिक चिंतन का सबसे मौलिक सिद्धांत "ट्रस्टीशिप" था, जिसका उद्देश्य समाज में आर्थिक असमानताओं को दूर करते हुए नैतिकता पर आधारित संतुलित व्यवस्था की स्थापना करना था। गांधीजी का विश्वास था कि संपन्न व्यक्ति अपनी संपत्ति का स्वामी नहीं, बल्कि समाज का ट्रस्टी (संरक्षक) है, और उसका उपयोग समाज की सेवा के लिए होना चाहिए। यह विचार न तो समाजवाद की तरह संपत्ति के पूर्ण राष्ट्रीयकरण का समर्थन करता था, और न ही पूँजीवाद की तरह व्यक्तिगत स्वार्थ को सर्वोच्च मानता था। बल्कि यह दोनों के बीच एक मानवीय संतुलन स्थापित करता है। ट्रस्टीशिप का यह सिद्धांत व्यक्ति के भीतर सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करता है, जिससे आर्थिक गतिविधियाँ केवल लाभ के लिए नहीं, बल्कि मानव कल्याण के लिए संचालित होती हैं। इस दृष्टि से गांधीजी का यह मॉडल आज की "कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी" (*CSR*) नीति का भी वैचारिक आधार बनता है।

ट्रस्टीशिप का दर्शन केवल आर्थिक न्याय तक सीमित नहीं था, बल्कि यह सामाजिक और नैतिक समानता के विचार को भी सशक्त बनाता था। गांधीजी ने समाज के सबसे कमजोर वर्गकृदलितों, किसानों, श्रमिकों और महिलाओंकृको राष्ट्रनिर्माण के केंद्र में रखने का आह्वान किया। उनके अनुसार, जब तक समाज में समान अवसर, सम्मान और अधिकार की भावना विकसित नहीं होती, तब तक कोई भी विकास वास्तविक नहीं कहा जा सकता। यह दृष्टिकोण आधुनिक "इन्क्लूसिव ग्रोथ" (*Inclusive Growth*) और "सोशल इक्विटी" (*Social Equity*) के सिद्धांतों से पूर्णतः मेल खाता है। आज के समय में जब वैश्विक असमानताएँ गहराती जा रही हैं, गांधी का यह विचार कि "विकास वही सच्चा है जो सबको साथ लेकर चले" न केवल नैतिक संदेश देता है, बल्कि सतत और न्यायपूर्ण समाज की रचना के लिए एक व्यावहारिक दिशा भी प्रदान करता है।

निष्कर्ष

गांधीवादी दर्शन और आधुनिक सतत विकास मॉडल का तुलनात्मक अध्ययन इस सत्य को उजागर करता है कि यद्यपि दोनों की उत्पत्ति भिन्न ऐतिहासिक संदर्भों में हुई, फिर भी उनके मूल लक्ष्य एक ही हैं – मानव, समाज और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करना। गांधीजी का विचारधारा आधारित विकास दृष्टिकोण आज के युग में एक नैतिक और मानवीय विकल्प के रूप में सामने आता है। जहाँ आधुनिक विकास मॉडल तकनीकी प्रगति और भौतिक समृद्धि को केंद्र में रखता है, वहीं गांधीवादी दृष्टिकोण मानव की आत्मिक उन्नति, सामाजिक समरसता और पर्यावरणीय संतुलन को प्राथमिकता देता है। गांधीजी का यह विश्वास कि "विकास का वास्तविक मापदंड व्यक्ति की नैतिक उन्नति है, न कि उत्पादन की मात्रा" आज के उपभोक्तावादी और असमान विश्व में अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है।

सतत विकास की वैश्विक अवधारणा – जैसे गरीबी उन्मूलन, लैंगिक समानता, स्वच्छ ऊर्जा, और पर्यावरण संरक्षण – गांधीवादी चिंतन से गहराई से प्रेरित दिखाई देती है। गांधी के 'स्वदेशी', 'ग्राम स्वराज', 'ट्रस्टीशिप', और 'सादा जीवन उच्च विचार' जैसे सिद्धांत आज भी विश्व के लिए नैतिक दिशा–दर्शक हैं। यदि आधुनिक विकास नीतियों में इन सिद्धांतों को व्यवहारिक रूप में अपनाया जाए, तो आर्थिक वृद्धि और पर्यावरणीय

संतुलन के बीच व्याप्त संघर्ष को समाप्त किया जा सकता है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि गांधीवादी दर्शन न केवल भारत के लिए, बल्कि समूचे विश्व के सतत भविष्य की राह दिखाने वाला एक जीवंत और कालजयी मार्गदर्शन है – जो विकास को केवल साधन नहीं, बल्कि मानवता की सेवा का माध्यम मानता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गांधी, महात्मा (2010)। हिंद स्वराज। अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन मंडल।
2. मिश्र, रमेश चंद्र (2012)। गांधी का आर्थिक चिंतन। वाराणसीः प्रकाशन संस्था।
3. शुक्ल, सुधीर कुमार (2015)। भारतीय अर्थव्यवस्था में गांधीवाद की प्रासंगिकता। दिल्लीः साहित्य सागर।
4. यादव, पुष्पा (2016)। "ग्रामोद्योग और गांधीवाद।" भारतीय समाज और विकास, खंड 22, अंक 31।
5. जोशी, अरुण (2018)। आत्मनिर्भर भारत और गांधीवादी दृष्टिकोण। जयपुरः विकास प्रकाशन।
6. सिंह, रेखा (2014)। "गांधी और आर्थिक न्याय।" आधुनिक विचारधारा पत्रिका, अंक 151।
7. तिवारी, संजय (2022)। नैतिकता और अर्थशास्त्र में गांधी का स्थान। इलाहाबादः चिंतन प्रकाशन।
8. शर्मा, नीलम (2019)। "स्वदेशी आंदोलन की वर्तमान प्रासंगिकता।" राष्ट्रीय विमर्श, अंक 8।
9. श्रीवास्तव, महेश (2017)। गांधीवाद और विकास का नया मार्ग। दिल्लीः राज पब्लिकेशन।
10. गुप्ता, सविता (2020)। "गांधी और पर्यावरणीय अर्थनीति।" हरित भारत, अंक 101।
11. वर्मा, आदित्य (2013)। गांधी का ग्राम स्वराज दृष्टिकोण। लखनऊः जनकल्याण प्रेस।
12. पांडेय, राजीव (2016)। "गांधीवादी विचारधारा और भारतीय नीतियाँ।" लोकनीति समीक्षा, अंक 61।
13. यादव, सीमा (2020)। "ग्राम विकास में गांधी का योगदान।" समाज दर्शन, अंक 121।
14. सिंह, देवेश (2015)। आर्थिक असमानता और गांधीवाद। मेरठः प्रेरणा प्रकाशन।
15. राणा, सीमा (2018)। "गांधी और लोकल इकॉनमी की धारणा।" विकास संवाद, अंक 91।
16. त्रिपाठी, अविनाश (2021)। गांधी का आर्थिक मानववाद। पटनाः प्रबुद्ध पब्लिकेशन।
17. कुमार, सुनील (2019)। सतत विकास और गांधीवादी चिंतन। भोपालः भारतीय अध्ययन केंद्र।
18. घोष, प्रमोद (2017)। गांधी और पर्यावरणीय न्याय। कोलकाताः दार्शनिक प्रकाशन।
19. मिश्रा, आनंद (2020)। "गांधी और सतत विकास लक्ष्यों का समन्वय।" समकालीन विकास विमर्श, अंक 44।
20. खान, रियाज (2018)। गांधीवादी अर्थशास्त्र और विश्व अर्थव्यवस्था। नई दिल्लीः नीति अध्ययन संस्थान।
21. चतुर्वेदी, केशव (2021)। गांधीवाद और 21वीं सदी का भारत। जयपुरः प्रगति पब्लिकेशन।
22. Das, Gopal (2016). Gandhian Economics and Global Sustainability. New Delhi: Oxford University Press.
23. Sen, Amartya (2019). The Idea of Justice and Gandhian Thought. London: Allen Lane.
24. Kumar, Rakesh (2020). “Revisiting Gandhian Economics in Sustainable Development Context.' Indian Journal of Social Science Research, Vol. 42, No. 2.
25. Singh, Meera (2022). Ethical Development and Gandhian Philosophy. New Delhi: Sage Publications.
26. Bose, Ananya (2021). Gandhi and Environmental Ethics. Kolkata: Academic Foundation.
27. Mukherjee, S. (2018). “Localism and Gandhian Self-Reliance in Modern Economy.' Development Review Quarterly, Vol. 15, Issue 3.
28. Patel, Ramesh (2019). Gandhi, Ecology and Humanity. Ahmedabad: Navjeevan Society.
29. Sharma, Dinesh (2023). Gandhi and Sustainable Development Goals (SDGs): A Comparative Perspective. Varanasi: Wisdom Press.
30. Jain, Rekha (2022). "Ethics, Simplicity and Modern Growth: Lessons from Gandhi." Indian Economic Review, Vol. 59, No. 1.

❑❑❑